B.A (Hons) Part-I
Paper-II
By-Dr. Ramendra Kr. Singh
D.K. College.

FREUDIAN THEORY OF DREAM

Ques:- Describe about Freudian theory or wishfulfilment theory of dream.

स्वप्न का अध्ययन करना दार्शनिकों एवं मनोवैज्ञानिकों के लिये बड़ा ही रुचिकर विषय रहा है। इसकी व्याख्या के लिये मनोवैज्ञानिकों द्वारा अनेक सिद्धान्तों का प्रतिपादन किया गया है, जिसमे फ्रायड द्वारा प्रतिपादित सिद्धान्त सबसे अधिक लोकप्रिय है। फ्रायड ने अपने मनोविश्लेषणात्मक अध्ययनों के आधार पर स्वप्न की व्याख्या के लिये एक नये सिद्धान्त का प्रतिपादन किया जिसे "Psychoanalysis theory of dream" कहा जाता है। यह सिद्धान्त अब तक की सभी प्रचलित मान्यताओं से अलग थी। फ्रायड का स्पष्ट कहना था कि सभी स्वप्न सार्थक एवं उद्देश्यपूर्ण होते हैं जिसे स्वप्नद्रष्टा का मनोविश्लेषण करके जाना जा सकता है। फ्रायड ने अपनी प्रसिद्ध पुस्तक "The interpertation of dream" में इसकी विशद चर्चा की है। फ्रायड के अनुसार स्वप्न के माध्यम से व्यक्ति की अतृप्त, अनैतिक एवं कामुक इच्छाओं की संतुष्टि होती है। ऐसे अनैतिक एवं कामुक विचार सामाजिक लोकलाज एवं चेतना के भय या प्रतिबन्ध (Censor) से अचेतन मन में जाकर दमित हो जाते हैं और निद्रावस्था में चेतना की लगाम ढीली हो जाने पर स्वप्न के माध्यम से इन दमित इच्छाओं की पूर्ति होती है। इसीलिये इनके सिद्धान्त को इच्छापूर्ति का सिद्धान्त या wishfulfilment theory of dream भी कहा जाता है। फ्रायड के अनुसार:-

"स्वप्न हमारी निद्रावस्था की वह अचेतन मानसिक प्रक्रिया है जिसके द्वारा अचेतन मन की दमित इच्छाओं की अभिव्यक्ति एवं संतुष्टि स्वप्न के माध्यम से होती है।

'Dream is the unconscious mental process of

by which our unconscious desires and wishes are expressed and fulfil in disguised form."

स्वप्न की व्याख्या के लिये फ्रायड ने मन को तीन पहलुओं में बाँटा और इसी के आधार पर स्वप्न को समझाने का प्रयास किया। ये तीन पहलू ~~निम्नलिखित~~ हैं:- (i) चेतन (ii) अर्द्धचेतन (iii) अचेतन। तीनों एक दूसरे से सम्बद्ध होते हैं और स्वप्न को घटित होने में भूमिका निभाते हैं। फ्रायड के अनुसार जाग्रत अवस्था में ~~चेतन~~ अचेतन एवं अर्द्धचेतन के बीच आदर्शवाद को लेकर रस्साकशी चलती रहती है। इन हालात में अनैतिक एवं कामुक विचारों की तृप्ति असंभव है क्योंकि समाज का डर एवं आदर्श भावना censor का काम करता है। इसीलिये ऐसी अनैतिक भावना हमारी चेतना में नहीं आती हैं। परिणामतः ऐसी अनैतिक एवं कामुक विचार अचेतन मन में जाकर दमित हो जाती है और मौका की तलाश में रहती हैं कि कब चेतना की आदर्शवादी लगाम ढीली पड़े और संतृप्त हो जाये। निद्रावस्था में चेतना की लगाम (censor) ढीला पड़ जाता है और इसका फायदा उठाकर ये अनैतिक एवं कामुक विचार ~~स्वप्न~~ अपना रूप बदलकर स्वप्न में आकर अपनी इच्छाओं की पूर्ति कर लेती हैं।

महान दार्शनिक प्लेटो यही बात बहुत पहले कुछ दूसरे अंदाज में कह चुका है:- "जिन कार्यों को पापी अपनी जाग्रत अवस्था में करते हैं वही कार्य साधु संत स्वप्न देखकर करते हैं। (Saint content themselves with dreaming what the sinners do in their ~~real~~ actual life."

फ्रायड ने अपने इस सिद्धान्त की वैज्ञानिक व्याख्या के लिये Dream Content and Dream Mechanism का Concept दिया। Dream Content में फ्रायड ने बतलाया कि स्वप्न का अर्थ समझने के लिए जो स्वप्न में दिखाई देता है उसके पीछे के छिपे अर्थ उससे भिन्न होते हैं। अतः पीछे के छिपे अर्थ को समझना आवश्यक है। इसके लिये स्वप्न के दो घटकों (Contents) (i) व्यक्त पक्ष (Manifest Content) तथा (ii) अव्यक्त पक्ष (Latent Content) की चर्चा की। जो स्वप्न में स्वप्न देखने वाला देखता है वह स्वप्न का Manifest Content है लेकिन उस स्वप्न का वास्तविक अर्थ Latent Content में छिपा रहता है जिसका विश्लेषण करने पर प्रकट होता है।

की सबसे महत्वपूर्ण assumption है। फ्रायड का मानना है कि स्वप्न के माध्यम से व्यक्ति की अतृप्त इच्छाओं की तृप्ति होती है और ऐसी इच्छाएँ प्रायः कामुक अथवा अनैतिक स्वरूप की होती हैं। ऐसी इच्छाओं की तृप्ति जाग्रतजीवन में संभव नहीं हो सकती है। Super Ego अथवा सामाजिक नैतिक प्रतिबन्धों के कारण अचेतन में दमित हो जाती है। ध्यान देने वाली बात यह है कि अचेतन में दमित इच्छाएँ चेतना में आने के लिये प्रयत्नशील रहते हैं जिससे अचेतन मे Conflicts उत्पन्न हो जाती है। लेकिन नींद की अवस्था में Censor ढीला पड़ जाता है। इसका फायदा उठाकर ऐसी इच्छाएँ रूप बदलकर प्रकट होती हैं और अपनी संतुष्टि कर लेती हैं।

5) स्वप्न प्रायः कामुक होते हैं :- फ्रायड का कहना है कि स्वप्न कामुक होते हैं। इस संदर्भ में फ्रायड का मानना है कि प्रत्येक समाज की अपनी कुछ मान्यताएँ एवं कायदे कानून होते हैं जिसके कारण लैंगिक इच्छाओं की तृप्ति जाग्रतअवस्था में संभव नहीं हो पाती है। क्योंकि ये एक तरह के Social Censor है से भयभित होते हैं। इस तरह वे अचेतन में जाकर दमित हो जाती हैं लेकिन नींद में मौका मिलते ही छद्म रूप में प्रकट होकर अपना कार्य पूरा कर लेती हैं।

6) स्वप्न प्रतीकात्मक होते हैं :- फ्रायड का कहना है कि नींद में भी Censor का डर थोड़ा बहुत बना रहता है। इसलिये ऐसी इच्छाएँ अपनी संतुष्टि के लिए प्रतीकों का सहारा लेती हैं। फ्रायड का मानना है कि अधिकांश प्रतीक Universal स्वरूप के होते हैं। फ्रायड का यह भी मानना है कि ऐसे प्रतीक Sexual होते हैं। स्वप्न में दिखाई पड़ने वाले objects का फ्रायड ने लम्बाई, पैनापन, चौड़ाई, गोलाई, गहराई, आदि के आधार पर Male Sex Part तथा Female Sex Part से जोड़कर अर्थ निर्धारित किये गये हैं। इसी प्रकार तैरना, टहलना सीढ़ी चढ़ना उड़ना, खाना खाना, आदि को Sexual activity से सम्बद्ध माना है। इन प्रतीकों का एक लम्बी सूची एवं उनके निहित अर्थ प्रस्तुत किया है।

की सबसे महत्वपूर्ण assumption है। फ्रायड का मानना है कि स्वप्न के माध्यम से व्यक्ति की अतृप्त इच्छाओं की तृप्ति होती है और ऐसी इच्छाएँ प्रायः कामुक अथवा अनैतिक स्वरूप की होती हैं। ऐसी इच्छाओं की तृप्ति जाग्रतजीवन में संभव नहीं हो सकती है। Super Ego अथवा सामाजिक नैतिक प्रतिबन्धों के कारण अचेतन में दमित हो जाती है। ध्यान देने वाली बात यह है कि अचेतन में दमित इच्छाएँ चेतना में आने के लिये प्रयत्नशील रहते हैं जिससे अचेतन मे Conflicts उत्पन्न हो जाती है। लेकिन नींद की अवस्था में Censor ढीला पड़ जाता है। इसका फायदा उठाकर ऐसी इच्छाएँ रूप बदलकर प्रकट होती हैं और अपनी संतुष्टि कर लेती हैं।

5) स्वप्न प्रायः कामुक होते हैं :- फ्रायड का कहना है कि स्वप्न कामुक होते हैं। इस संदर्भ में फ्रायड का मानना है कि प्रत्येक समाज की अपनी कुछ मान्यताएँ एवं कायदे कानून होते हैं जिसके कारण लैंगिक इच्छाओं की तृप्ति जाग्रतअवस्था में संभव नहीं हो पाती है। क्योंकि ये एक तरह के Social Censor है से भयभित होते हैं। इस तरह चे अचेतन में जाकर दमित हो जाती हैं लेकिन नींद में मौका मिलते ही छद्म रूप में प्रकट होकर अपना कार्य पुरा कर लेती हैं।

6) स्वप्न प्रतीकात्मक होते हैं :- फ्रायड का कहना है कि नींद में भी Censor का डर थोडा बहुत बना रहता है। इसलिये ऐसी इच्छाएँ अपनी संतुष्टि के लिए प्रतीकों का सहारा लेती हैं। फ्रायड का मानना है कि अधिकांश प्रतीक Universal स्वरूप के होते हैं। फ्रायड का यह भी मानना है कि ऐसे प्रतीक Sexual होते हैं। स्वप्न में दिखाई पड़ने वाले Objects का फ्रायड ने लम्बाई, पैनापन, चौड़ाई, गोलाई, गहराई, आदि के आधार पर Male Sex Part तथा Female Sex Part से जोड़कर अर्थ निर्धारित किये गये हैं। इसी प्रकार तैरना, टहलना सीढ़ी चढना उड़ना, खाना खाना, आदि को Sexual activity से सम्बद्ध माना है। इन प्रतीकों का एक लम्बी सूची एवं उनके निहित अर्थ प्रस्तुत किया है।

7) स्वप्न व्यक्तिगत होते हैं" - फ्रायड के स्वप्न सिद्धांत की एक विशेषता या अभिधारणा (Assumption) यह भी है, कि स्वप्न व्यक्तिगत होते हैं क्योंकि स्वप्न में व्यक्ति अपनी निजी जीवन की 'अतृप्त इच्छाओं' की तृप्ति होती है। स्वप्न में ऐसी वासनाएँ तृप्त होती हैं जो बचपन से लेकर आजीवन स्वप्न देखने वाले के चेतन मन में उत्पन्न हुई थी लेकिन अतृप्त रह गई थी। होती हैं।

8) शैशव कामुक इच्छाओं की अभिव्यक्ति: - फ्रायड के अनुसार स्वप्न के माध्यम से infantile libidinous wishes की अभिव्यक्ति एवं संतुष्टि होती है।

9) स्वप्न अतीत अनुरक्ती होते हैं: - फ्रायड के स्वप्न सिद्धान्त की एक अभिधारणा यह भी है कि स्वप्न का सम्बन्ध अतीत की दमित घटनाओं एवं इच्छाओं से होता है। इसका वर्तमान एवं भविष्य की घटनाओं से कोई मतलब नहीं होता है।

10) स्वप्न के दो घटक या पहलू: फ्रायड के सिद्धान्त की एक अभिधारणा यह भी है कि उन्होंने स्वप्न के दो पक्ष या विषय को माना है। पहला पक्ष Manifest पक्ष होता है दूसरा पक्ष Latent पक्ष होता है। स्वप्न में जो दिखाई पड़ता है यानि जो इच्छाएँ पूरी होते दिखती हैं, वे व्यक्तपक्ष (Manifest) content है और जिन इच्छाओं की पूर्ति के लिए स्वप्न देखते हैं, यानि वे इच्छाएं जो व्यक्त पक्ष में छिपी रहती हैं उसे Latent-Content कहते हैं। जैसे एक युवती स्वप्न देखती है कि एक होटल में अपने मित्र के साथ भरपेट खाना खा रही है। इस स्वप्न में ~~भरपेट~~ खाना खाने का स्वप्न देखना Manifest Content है जबकि इसका विश्लेषण करने पर पता चलता है कि जिस युवक के साथ खाना खा रही थी उससे वह प्रेम करती है और Sex करना चाहती थी। यहाँ खाना खाना Sexual intercourse का प्रतीक है और उस स्वप्न का Latent "Content" है।

[illegible] :- यह सत्य है कि फ्रायड प्रथम व्यक्ति थे जिन्होंने [illegible] को [illegible] के [illegible] आधार पर व्याख्या करने का प्रयास किया और इस क्षेत्र में [illegible] गुत्थियों को [illegible] सुलझाने में सफलता प्राप्त की। [illegible] नहीं है [illegible]

(iv) [illegible] सिद्धान्त के कुछ प्रमुख गुण :-

(i) फ्रायड का सिद्धान्त नैदानिक [illegible] पर आधारित है [illegible] इनका सिद्धान्त इनके [illegible] अनुभव के आधार पर है। [illegible] Psychoanalysis [illegible]

(ii) इनके सिद्धान्त [illegible] इस आधार पर स्वप्न के [illegible] समझने में सफलता हासिल कर ली।

(iii) अपने सिद्धान्त के माध्यम से अचेतन मन [illegible] को प्रमाणित करने में सफल रहे। उन्होंने स्वप्न [illegible]

(iv) उन्होंने यह साबित करने में कुछ हद तक सफलता हासिल की कि प्रत्येक स्वप्न सार्थक एवं उपयोगी होते हैं।

(v) यह भी साबित करने में सफल है कि [illegible] समान रहते पर भी भिन्न-भिन्न लोग भिन्न-भिन्न तरह के स्वप्न क्यों देखते हैं। उन्होंने बताया कि प्रत्येक व्यक्ति की अचेतन में अलग-अलग तरह की दमित इच्छाएँ रहती हैं जिसके कारण ऐसा होता है।

(vi) इसी तरह यह सिद्धान्त यह भी साबित कर ~~देता है कि [illegible]~~ सकते परिस्थितियों [illegible] आखिर अलग-अलग समय भिन्न-भिन्न तरह के स्वप्न क्यों देखते हैं? ऐसा इसलिए होता है कि एक व्यक्ति में कई तरह की अभिलाषाएँ दमित होती हैं।

(vi)- इस सिद्धान्त को शोध मूल्य (Heuristic value) प्राप्त है। इससे प्रभावित होकर कई नवीन सिद्धान्त का आगमन हुआ जिसमें Jung का Analytical theory एडलर का Personal theory आदि प्रमुख हैं।

सीमाएँ:- इसके बावजूद इनके स्वप्न सिद्धान्त की कुछ सीमाएँ भी हैं:-

i) इन्होंने अपने सिद्धान्त में यह साबित करने का प्रयास किया कि स्वप्न नींद का रक्षक है। लेकिन यह देखा जाता है कि दुःखद स्वप्न बेचैनी बढ़ाते हैं और नींद में बाधित हो जाते हैं।

ii) फ्रायड अपने सिद्धान्त में sex पर आवश्यकता से अधिक emphases दे देते हैं जो सही नहीं है। यह भी सत्य है कि स्वप्न में अनैतिक इच्छाओं से अलग धार्मिक, नैतिक आदि इच्छाएँ भी पूरी होती हैं।

iii) जुंग ने फ्रायड के सार्वभौमिक प्रतीक (Universal Symbol) के विचारधारा पर विरोध करते हुए कहा कि सभी Symbols का sexual अर्थ देना गलत है। ये Non sexual भी हो सकते हैं। जैसे सीढ़ी चढ़ना फ्रायड के अनुसार sexual intercourse है, जुंग के अनुसार यह सामाजिक प्रगति का प्रतीक है अतः प्रतीक Non-Universal होते हैं।

iv) फ्रायड के स्वप्न की सिद्धान्त का विरोध करते हुए जुंग एवं एडलर का कहना है कि स्वप्न में Past का नहीं बल्कि future की घटित होने वाली घटनाएँ भी होती हैं तथा Present की भी बातें होती हैं।

v.) मैकडूगल ने (1966) आलोचना करते हुए कहा कि यह सिद्धान्त Anxiety dream, terror dream तथा Punishment dream की व्याख्या करने में असफल है।

vi) मैकडूगल (1966) ने फ्रायड के सिद्धान्त की आलोचना करते हुए कहा कि फ्रायड के सिद्धान्त में Generalization का दोष है। इनकी व्याख्या स्नायुविकृत (रोगियों) के केस

रिसर्च पर आधारित है। थोड़े से संस्कृतियों का अध्ययन पर आधारित है जो गलत है। अतः सामान्यीकरण करना उचित नहीं है।

निष्कर्ष उपर्युक्त तथ्यों के आलोक में कहा जा सकता है कि फ्रायड का स्वप्न सिद्धान्त पुरातन विचारधाराओं एवं मान्यताओं को न मानकर एक सर्वथा नवीन विचारधारा को प्रस्तुत किया। यह सिद्धान्त तत्कालीन विश्व को फ्रायड के पक्ष या विपक्ष में आने पर मजबूर कर दिया, इस सिद्धान्त में कुछ हद तक सत्यता अवश्य है जिसने पहली बार स्वप्न को वैज्ञानिकता के कसौटी पर कसने का प्रयास किया। निश्चित तौर पर फ्रायड की बड़ी देन है जिसमें कुछ दोष अवश्य ही है। मैक्डूगल (1966) के अनुसार फ्रायड का स्वप्न के सिद्धान्त कुछ स्वप्नों और विशेषकर Neurotic Persons के स्वप्नों की व्याख्या करने में सफल रहा है किन्तु सामान्य व्यक्तियों की प्रत्येक स्वप्न की सही व्याख्या करने में विफल है।"